અનુબંધ ચતુષ્ટય - અધિકારી, વિષય, પ્રયોજન અને સંબંધ

અધિકારી - निश्चयः,श्रद्धा,मेधा,उद्यमम्,साहसम्,धैर्यम्

વિષય - भाषा ज्ञानम्

વ્યંજન – જે સ્વરના આધારે બોલાય છે. દા.ત. क् + अ (કકારને સ્વતંત્ર ન બોલી શકાય.કોઈક સ્વર હોવો જરૂરી છે.) क का कि की कु कू कृ कॄ क्लृ के कै को कौ

સ્વર - જે સ્વતંત્ર રીતે બોલાય છે. દા.ત अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ओ ऐ औ [संयुक्त स्वर = (अ+इ=ए, अ+उ =ओ, अ+ए= ऐ , अ+ओ=औ)]

संयुक्त अक्षर

क्+क = क्क अक्कल

क्+ष = क्ष क्षमा

क्+त = क्त वक्ता

ङ्+ग = ङ्ग अथवा ङ्ग रङ्ग भङ्ग

ङ्+क = ङ्क रङ्क अथवा ઉપરની જેમ

क्+ऋ =कृ कृष्ण

ज्+ञ्+अ =ज्ञ ज्ञान, विज्ञान

ञ्+ज = ञ्ज रञ्जन, गुञ्जन

ञ्+च = ञ्च   चञ्चल

ष्+ट् = ष्ट तुष्ट

ष्+ठ = ष्ठ   सौष्ठव

त्+त = त्त तत्त्व

त्+र = त्र   अत्र

द्+य = द्य आद्य

द्+व =द्व द्वन्द्व

द्+ध = द्ध   बद्ध

द्+र = द्र   तन्द्रा

र् (रेफ्)+व्यंजन = र्प र्त   अर्पण कीर्तन

ह्+म = ह्म   ब्राह्मण

ह्+न = ह्न   अह्न

ह्+ण = ह्ण

ह्+ऋ = हृ   हृदय

ह्+री   = ह्री

ह्+ल = ह्ल आह्लाद